1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ज्ञान ज्योति महोत्सव
महासम्पर्क अभियान
महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती के अवसर पर न्यूनतम 200 महानुभावों से संपर्क करने का संकल्प लीजिए
अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड करें

वर्ष 47, अंक 35 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 जुलाई, 2024 से रविवार 21 जुलाई, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में
सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका एवं आर्यसमाज ट्राई स्टेट द्वारा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

18-19-20-21 जुलाई, 2024 न्यूयार्क (अमेरिका)

भारत, सिंगापुर एवं मॉरिशस सहित अनेक देशों से न्यूयार्क पहुंच रहे हैं आर्यजनों के जत्थे

आर्य समाज द्वारा आर्य महासम्मेलनों के आयोजन करने का इतिहास सदियों पुराना है। इसके पीछे आर्य समाज की जो भावना और कामना निहित होती है उसमें ईश्वर की अमृतवाणी वेद ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना, यज्ञ,योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा और साधना का संदेश विश्व समुदाय को देना, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार करना, ढोंग,पाखंड और अंधविश्वास के प्रति मानव समाज को जागृत करना तथा महर्षि दयानंद सरस्वती

- शेष पृष्ठ 3 पर

सीधा प्रसारण केवल आर्यसन्देश टीवी
Live Telecast Only on Arya Sandesh TV
Arya Sandesh TV
सीधा प्रसारण का विवरण पृष्ठ 8 पर दिया गया है। भारतीय-अमरिकी समय अनुसार परिवर्तन सम्भव है। अत: आर्यसन्देश टी.वी. देखते रहें।

समस्त आर्य समाज एवं आर्य संस्थाएं श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में करें

वेद प्रचार सप्ताहों का उत्साहपूर्वक आयोजन

गत वर्ष की भांति श्रावणी उपाकर्म का यह प्रेरक पर्व दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों के मध्य आया है। अत: सभी आर्य समाज श्रावणी पर्व पर महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार- प्रसार और विस्तार के लिए पूरी शक्ति के साथ विशेष आयोजन करें,

- शेष पृष्ठ 3 पर

श्रावणी पर्व पर हम आर्यसमाजों में सात दिवसीय विशेष यज्ञ, दैनिक योग, दैनिक स्वाध्याय, साप्ताहिक सत्संग, समय-समय पर सेवा, दैनिक साधना आदि कार्यक्रमों का संकल्प लें और आयेजन करें, अपने बच्चे-बच्चियों का उपनयन-यज्ञोपवीत संस्कार करें-कराएं, अपने यज्ञोपवीत बदलें, नए यज्ञोपवीत धारण करें, यज्ञोपवीत के तीन धागे-सूत्रों का संदेश-उपदेश-आदेश श्रवण करें, सोचें, समझें और अमल करें। देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण से उऋण होने के लिए संकल्प के अनुसार पुरुषार्थ करें।

स्वाध्याय के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन से आनलाइन वेद, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, महर्षि दयानन्द जीवन चरित, आर्य समाज का इतिहास, उपनिषद, दर्शन शास्त्र बच्चों के लिए महापुरुषों के जीवन पर आधारित कॉमिक्स और अनेक अन्य आर्ष साहित्य मंगवाकर उनका स्वाध्याय करें। हम आर्यों के घरों में चारों वेद, 11 उपनिषद, 6 दर्शन शास्त्र, बाल्मीकि रामायण, गीता, समृति ग्रंथ, ब्राह्मण ग्रंथ और आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा रचित प्रेरणाप्रद पुस्तकें होनी ही चाहिए। ऑनलाइन पुस्तकें मंगाने के लिए www.thearyasamaj.org पर लॉगइन करें अथवा लिए श्री रवि प्रकाश जी 9540040339 से सम्पर्क करें। किंतु हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमें अपने घर में या आर्य समाज में केवल संग्रहालय नहीं बनाना बल्कि पुस्तकालय बनाना है। संग्रहालय तो वस्तुओं को सजाकर रखने कि प्रक्रिया है लेकिन पुस्तकालय में रखी हुई पुस्तक पढ़ने के लिए प्रयोग की जाने वाली होती हैं। जबकि संग्रहालय में रखी हुई प्रत्येक वस्तु या पुस्तकें केवल आप देख सकते हैं, उन्हें ले नहीं सकते। उपयोगिता तो तभी है जब हम स्वाध्याय का नियम बनाएं। श्रावणी पर्व एवं रक्षाबंधन की सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। - सम्पादक

देववाणी-संस्कृत

हे तेजस्वरूप! आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें

वेद-स्वाध्याय

तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि।। धियो यो नः प्रचोदयात्

-ऋ॰ 3।62।10; यजु.॰ 3।35; साम॰ ऊ॰ 6।3।10।।

शब्दार्थ- सवितुः =प्रेरक, उत्पादक **देवस्य** =परमात्मदेव के **तत्**= उस **वरेण्यम्**= वरने योग्य **भर्गः** =शुद्ध तेज को **धीमहि** = हम धारण करते हैं, ध्यान करते हैं **यः** = जो ध्यारण किया हुआ तेज **नः** = हमारी **धियः** = बुद्धियों को, कर्मो को **प्रचोदयात्**=सदा सन्मार्ग पर प्रेरित करता रहे।

विनय- मुझे क्या करना चाहिए क्या नहीं - यह मैं नही जानता। किस समय क्या कर्त्तव्य है क्या अकर्त्तव्य, क्या धर्म है, क्या अधर्म-यह मैं नहीं मैं नहीं जान पाता। सुना है कि बड़े-बड़े ज्ञानी भी बहुत बार इस तरह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं, परन्तु क्या इसका कोई इलाज नहीं है? हे सवितः देव! हमारे उत्पादक देव! क्या तूने हमें उत्पन्न करके इस अँधेरे संसार में यूँही छोड़ दिया है? कोई निर्भ्रानत (निश्चित) प्रकाश हमारे लिए तुमने नहीं दिया है- यह कैसे हो सकता है? नहीं, तुम अपने अनन्त प्रकाश के साथ सदा हमारे हो। यदि हम चाहें और यत्न करें तो तुम हमें अपने प्रकाश से आप्लावित कर सकते हो। इसके लिए हम आज से ही यत्न करेंगे और तेरे उस 'भर्ग,' (विशुद्ध तेज) को अपने में धारण करने लगेंगे जो वरणीय है, जिसे हर किसी को लेना चाहिए- जिसे प्रत्येक मनुष्य-जन्म पानेवाले को अपने अन्दर स्वीकार करने की आवश्यकता है। इस तेरे वरणीय शुद्धस्वरूप का हम जितना श्रवण, मनन, निदिध्यासन करेंगे अर्थात् जितना तेरा कीर्त्तन सुनेंगे, तेरा विचार करेंगे, तुझमें मन एकाग्र करेंगे, तेरा जप करेंगे, तुझमें अपना प्रेम समर्पित करेंगे उतना ही तेरा शुद्धस्वरूप हमारे अन्दर धारण होता जाएगा। बस, यह ऊपर से आता हुआ तुम्हारा तेज ही हमारी बुद्धि को और फिर हमारे कर्मो को ठीक दिशा में प्रेरित करता रहेगा। इस शुद्धस्वरूप के साथ तुम ही मेरे हृदय में बस जाओगे और तुम ही मेरी बुद्धि, मन आदि-सहित इस शरीर के सञ्चालक हो जाओगे। फिर धर्म-अधर्म की उलझन कहाँ रहेगी! तुम्हारे पवित्र संस्पर्श से इस शरीर की एक-एक चेष्टा में शुद्ध धर्म की ही वर्षा होगी। इसलिए है प्रभो! हम आज से सदा तुम्हारे शुद्ध तेज को अपने में धारण करने में लगते हैं। एक-एक मानसिक विचार के साथ, एक-एक जप के साथ इस तेज का अपने अन्दर आह्वान करेंगे और इस तरह प्रतिदिन इस तेज को अपने में अधिकाधिक एकत्र करते जाएँगे। निश्चय है कि इस 'भर्ग' की प्राप्ति के साथ-साथ धर्म के निश्चय में पटु होती हुई हमारी बुद्धि एक दिन तुम्हारी सर्वज्ञता के कारण पूर्ण रूप से ठीक मार्ग पर चलनेवाली हो जाएगी।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

हाथरस कांड का असल दोषी कौन बाबा या अंधविश्वास?

हाथरस में कथित सत्संग और 122 लोगों की मौत के बाद लोग कह रहे हैं कि बाबा परमात्मा है वह ब्रह्माण्ड का स्वामी है, उसने इस संसार को रचा है, वो कैसे अपने भक्तों की मौत का कारण हो सकते हैं। सत्संग में जिन लोगों की मौत हुई उन्हें मोक्ष मिल गया। ये बयान उन लोगों के नहीं जो जिन्दा बच गये बल्कि वो लोग भी कह रहे हैं जिन्होंने अपनों को खोया है। किसी ने पत्नी को खोया तो किसी ने बेटी को किसी ने 20 साल बाद पैदा हुआ बेटा तक खो दिया।

कहते हैं आस्था इन्सान को मजबूत बनाती है, लेकिन अंधी आस्था की चरम अवस्था इन्सान को कमजोर भी बना देती है। आस्था पागल भी कर सकती है और इन्सान को भेड़ बनाकर मौत का निवाला भी। साल 1867 हरिद्वार कुंभ में पाखंड खंडनी पताका फहरा कर स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा था कि 'गिरना या फिसलना सरल है, संभलना समझदारी है पर, संभल कर उठकर खड़े होना, अपने को सच्चाई के मार्ग पर स्थापित कर लेना बेहद कठिन है। सत्य को जानना ही पाखंड को तोडना़ है और उसका नाश करना है। किन्तु आज आधुनिक युग में जहाँ आशा थी पाखंड कम होगा लेकिन हाथरस की घटना से महसूस हुआ कि अपने चरम पर जा रहा है। हाथरस की दर्दनाक घटना के बाद जिम्मेदार की तलाश जारी है। सीबीआई जाँच की मांग की जा रही है, एसआईटी का गठन हो रहा है। सवाल वही है कि घटना का जिम्मेदार कौन है? जहाँ देश के पढ़े लिखे बौद्विक वर्ग को एक सुर में बोलना चाहिए था कि इस हादसे का जिम्मेदार पाखंड और अंधविश्वास है, वहां इसके लिए को प्रशासन तो को भीड़ को जिम्मेदार ठहरा रहा है।

दरअसल ये वो लोग है जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करते। ये लोग विश्वास करते हैं बाबाओ पर ये लोग हर एक छोटे से छोटे काम के लिए कर्म पर भरोसा ना करके बाबाओं पर भरोसा करते हैं। परेशानी का निवारण, सुख की इच्छा दुःख का निवारण सब काम बाबा करा रहे हैं। असल में इस भीड़ के मूल में दुःख है, अभाव है, गरीबी है किसी का ज़मीन का झगड़ा चल रहा है तो किसी को कोर्ट-कचहरी के चक्कर में अपनी सारी जायदाद बेचनी पड़ी है। किसी को सन्तान चाहिए तो किसी को नौकरी! शायद ये तमन्नाएं ही जन्म देती हैं धर्मांतरण को डेरों को, बाबाओं और बंगाली बाबाओं को।

आज दुनिया नए दौर से गुज़र रही है, हर को एक बाबा एक गुरु चाहता है। लेकिन, ये बाबा महर्षि रमन्ना, महर्षि चरक, महर्षि पाणिनि, पतंजली, बाल्मीकि जी महर्षि दयानंद सरस्वती जी जैसे महान ऋषि और समाज को न चेतना देने वाले नहीं है। ये सिर्फ बाबा सर्विस प्रोवाइडर हैं, यानी वो जनता को ज़रूरी सेवाएं देते हैं।

सूरजपाल जाटव उर्फ़ नारायण हरी साकार बाबा के भक्तो के आप इंटरव्यू सुनिए उनके बयान सुनिए 90 प्रतिशत लोग एक दावा कर रहे है कि किसी का बच्चा बीमार था। किसी की पत्नी बीमार थी तो किसी के माता-पिता बीमार थे। वो बाबा के कारण ठीक हुए, यानि एक चीज समझ आ सकती हैं कि 90 प्रतिशत लोग भक्त नहीं बल्कि मरीज है। चाहें वो फिजिकल बीमार हो या मानसिक तो इन्हें भक्त कहना भी ठीक नहीं है। साफ़ तौर पर ये बीमार लोग है।

अगर बीमार है तो कथित बाबा के पास ही क्यों आते हैं? सवाल ये भी हो सकता है, दरअसल देश की आबादी बहुत है 80 प्रतिशत तो सरकारी राशन पर जिन्दा बताये जाते हैं। बीमारी भी है तो देश में सरकारी अस्पताल उतनी संख्या में नहीं जितनी जरूरत हैं। प्राइवेट अस्पताल इतना महंगा इलाज करते है कि एक गरीब आदमी जाने से पहले सौ बार सोचता है। तो ऐसे में कमान इन बाबाओं ने सम्हाल ली। बाबा चमत्कार का दंभ भरते हैं, जब एक मरीज कहता है कि वो बाबा के चमत्कार ठीक हुआ फिर दूसरा कहता है वो भी ठीक हुआ। तीसरा कहता है उसे भी आराम मिला तो मनोविज्ञान के अनुसार चौथा खुद कहेगा कि उसे भी अब आराम है। क्योंकि वो भीड़ का हिस्सा बनना चाहेगा वो भी खुद को बड़ा भक्त होने का दावा करेगा।

सोचिये आखिर ये सत्संगी लोग कौन हैं? कहां से आते या कहाँ से लाये जाते हैं, क्यों ये किसी बाबा के लिए मरने मारने तक के लिए उतारू हो जाते है? क्या इस सबका कारण धर्म है या फिर अंधविश्वास जिसका फायदा कथित बाबा गुरु घंटाल यहाँ तक धर्मांतरण करने वाले गैंग तक उठा रहे हैं?दूसरा सवाल ये भी कि आखिर कहाँ से अचानक इतनी बड़ी संख्या में ये बाबा पैदा हो रहे हैं, जो थोड़े से समय के अन्दर अरबो-खबरों का साम्राज्य खड़ा कर लेते हैं। हाथरस वाले बाबा का असली नाम सूरज पाल उर्फ नारायण हरि है। वह एटा के रहने वाले हैं। खुद की आर्मी बना रखी है और बाबा पर यौन शोषण समेत 5 मामले दर्ज हैं। लेकिन उनका कनेक्शन सियासत से भी है। कुछ मौकों पर यूपी के बड़े नेताओं को उनके मंच पर देखा गया। इसमें समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव तक का नाम भी शामिल है। बताया जा रहा है कि यौन शोषण के आरोप एक बर्खास्त कांस्टेबल से बाबा बने सूरजपाल जाटव के कथित सत्संग में अब तक 122 लोगों की मौत हो चुकी हैं। मरने वालों में ज्यादातर बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं हैं। लेकिन सवाल जिन्दा है कि आखिर ये सत्संगीं लोग कौन हैं?

इस कारण ये गाँवो छोटे शहरों और क़स्बों में आम लोगों की ज़िदगी का अहम हिस्सा बन गए हैं। राजनैतिक नज़रिए से देखें, तो ये बाबा वोट बैंक का काम करते हैं। यहां तक कि कई राजनेता भी इनके भक्त बन जाते हैं। यहां पर हम बाबा और नेता के बीच लेन-देन का खुला कारोबार चलता है। ये लेन-देन वोट, आस्था और पैसे का होता है। बाबा के पास भक्तो की भीड़ है तो राजनेताओं को वोट चाहिए इस कारण इनका गठबन्धन बन चूका है।

धर्म और राजनीति के इस लेन-देन से भारतीय लोकतंत्र का पहिए घूमता है। लेकिन हमें बाबाओं की असली पहचान और पहुंच को समझना होगा। ये बाबा स्थानीय स्तर के बिचौलिए हैं, जो अपने अंदर जादू ताक़त होने का दावा करते हैं। एक तरफ ये लोगों को सिखाते हैं, त्याग करो, दान करो, क्या लेकर आये थे क्या लेकर जायेंगे। दूसरी तरफ़ वो अपनी ताक़त और धन-वैभव के लिए भी शोहरत बटोरते हैं। महंगी लक्जरी गाड़ियों में घूमते है। कई बार यौन शोषण करते हैं और का अपराध में लिप्त पाए जाते है। भले ही पिछले कुछ दशकों से उभरने वाले किस्म-किस्म के बाबाओं ने राष्ट्र के मुख पर कालिख पोतने का किया है। अपनी अनुयायी स्त्रियों के शारीरिक शोषण, हत्या-अपहरण से लेकर अन्य जघन्य अपराध करने वाले बाबाओं का प्रभाव इस कदर बढ़ता जा रहा है कि आज जनता को तो छोड़िये, सदिच्छाओं वाले राजनेता, अभिनेता, अधिकारी, बुद्धिजीवी इत्यादि वर्ग भी उनसे घबराने लगा है। **-सम्पादक**

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जीवनी, सत्यार्थ प्रकाश और उनके अन्य ग्रंथों के वितरण के साथ ही आर्य समाज द्वारा धर्म, संस्कृति और संस्कारों के लेकर राष्ट्र के समक्ष चुनौतियों के प्रति समाज के जाग्रत करने के अभियान हेतु विशेष छः पुस्तकें चुनौतियों का चिंतन, गले लगाइए-रिश्ते बचाईए, ये नशा कैसा है, प्राकृतिक खेती, जाने दयानंद को आदि का भी प्रचार करें, अपने क्षेत्र के प्रशासनिक अधिकारियों, सांसद, विधायक, निगम पार्षद इत्यादि महानुभावों को भी अपने कार्यक्रमों में आमंत्रित करें और आर्य समाज की मान्यता, परंपरा और सिद्वांतों से उन्हें परिचित कराने का प्रयास करें। अपने घरों के बच्चों और युवाओं को भी कार्यक्रमों में सहभागी बनाएं।

इस अवसर वेद प्रवचन, वेद स्वाध्याय, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जीवनी, आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास और आर्ष ग्रन्थों के साप्ताहिक स्वाध्याय के आयोजन करें। आर्य समाजों में आयोजित कार्यक्रमों में उमंग, उत्साह और उल्लास का ऐसा वातावरण निर्मित करें जिससे हर आयु वर्ग के लोग आकर्षित होवे और आर्य समाज के भजन, वेद प्रवचन, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा और साधना से लाभ प्राप्त करें।

नई शक्ति और नए उत्साह का आधार हैं विचार

बंधुओ, वैदिक पर्व पद्धति के अनुसार मनाया जाने वाला प्रत्येक पर्व शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास की प्रेरणा प्रदान करता है। जीवन की यात्रा में चलते-चलते किसी-न-किसी कारण से मानव मन में उदासी, निराशा और चिंता आदि का आना स्वाभाविक है। इसीलिए पूर्वजों के अनुसार समय-समय पर हमारे यहां पर्व मनाने की परंपरा अति प्राचीन है। क्योंकि पर्वों में अंतर्निहित प्रेरणा मनुष्य को न शक्ति, नया उत्साह और नया विचार देकर उसे आगे बढ़ने, ऊंचा उठने के लिए प्रेरित करते हैं। श्रावणी पर्व का अवसर हमारे सामने है। इस पर्व में वेदों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का विशेष महत्व माना गया है। अपने वैदिक ज्ञान-विज्ञान को पढ़ने, सुनने, सोचने, समझने और उस पर गहरा से चिंतन-मनन कर अपनाने से ही मनुष्य जीवन ऊंचा प्राप्त करता है।

पार्कों और खुले स्थानों पर करें प्रचार

इस वर्ष हमें आर्य समाजों में या उनके बाहर पार्कों आदि में बड़े कार्यक्रम समारोह पूर्वक करने चाहिए। जिससे वेदादि शास्त्रों का संदेश घर-घर तक पहुंचे। यज्ञ में सब लोग आहुति देवें, सबके घरों में यज्ञ की सुगंध पहुंचे, वेद मंत्रों की ध्वनि पहुंचे और नियमित यज्ञ करने का सब संकल्प लें, आर्य समाजों के श्रावणी पर्व के आयोजनों से सभी लोग लाभान्वित हों, गौरवान्वित हों और सबको जीवन आशान्वित हों।

स्वाध्याय से होता है-
समुचित जीवन का विकास

आर्य समाज के विद्वान आजीवन विद्यार्थी की भांति स्वाध्याय करते और कराते हैं। परिणाम स्वरूप हमारे वैदिक साहित्य का भंडार समृद्ध है। इसको निरंतरता प्रदान करने के लिए हमारे आचार्यों, पुराहितों को भी अपनी योग्यता को बढ़ाने के लिए इन दिनों में विशेष स्वाध्याय करना चाहिए। प्रत्येक आर्य समाजी को अपने महापुरुषों का प्रेरक जीवन और आर्य समाज का इतिहास भी पढ़ना चाहिए। स्वाध्याय से आत्मबल बढ़ता है, मनोबल में वृद्धि होती है और जीवन का समुचित विकास स्वाध्याय से ही संभव है।

जीवन में नयापन आता है स्वाध्याय से

वैदिक धर्म में प्रत्येक वर्ण और आश्रमों के मनुष्यों के लिए वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय अनिवार्य माना गया है। ब्राह्मण वर्ण और ब्रह्मचर्य आश्रम की तो नींव ही स्वाध्याय पर टिकी है अर्थात् विद्यार्थियों को और ब्राह्मण, पुरोहित-आचार्यों को विशेष रूप से स्वाध्याय शील होना ही चाहिए। क्षत्रिय वर्ग अर्थात् सैन्य बल तथा सेना के उच्च अधिकारी लोग स्वाध्याय शील होंगे तो सुरक्षा और अनुशासन की व्यवस्था उचित होगी। इसी तरह व्यापारी वर्ग को भी स्वाध्याय का विशेष लाभ यह होता है कि उनमें सात्विकता का समावेश रहेगा। शूद्रों को भी अपने उत्थान के लिए स्वाध्याय करना ही चाहिए।

आर्ष ग्रंथों के स्वाध्याय का लें संकल्प

अधिकांशतया एक उम्र तक कुछ विशेष जानने की और सीखने की जिज्ञासा मनुष्य के भीतर दिखा देती है, उसके बाद मनुष्य को आलस्य घेर लेता है और व्यक्ति पढ़ना-पढ़ाना बंद कर देता है। अगर को उसे स्वाध्याय के लिए प्रेरित भी करे तो वह यही कहता है कि अब पढ़कर क्या करना? क्या करेंगे पढ़-लिखकर, बहुत पढ़ लिया, बस अब और नहीं। लेकिन श्रावणी पर्व प्रेरित करता है कि जीवन में नवीनता बनाए रखने के लिए निरंतर स्वाध्याय अति आवश्यक है। जब तक आप सीखते रहते हैं तब तक आपके जीवन में नयापन बना रहता है।

अपार और अनुपम है वैदिक ज्ञान संपदा

समुद्र के किनारे पर जो रेत का ढेर होता है उसमें से एक कण के बराबर भी मनुष्य पूरे जीवन में नहीं जान पाता और हमारी ज्ञान संपदा कितनी है, जितना कि समुद्र के किनारे रेत का भंडार। ईश्वर की अमृतवाणी वेद, उपनिषद, दर्शन शास्त्र, महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश आदि अनेक ग्रंथ, स्मृति ग्रंथ, नीति ग्रंथ, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, रामायण , गीता, महाभारत और उपरोक्त विषयों पर आधारित हजारों पुस्तकें वैदिक साहित्य के रूप में उपलब्ध हैं। इसलिए श्रावणी पर्व पर संकल्प करें कि हम प्रतिदिन नियमपूर्वक आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय करेंगे। नित निरंतर कुछ-न-कुछ वैदिक ज्ञान धारण कर अपने जीवन को गरिमा प्रदान करते रहेंगे।

श्रावण में वेद स्वाध्याय का महत्व

शारीरिक उन्नति, प्रगति का आधार जैसे अन्न को माना गया है, वैसे ही मन की विशालता और महानता का आधार स्वाध्याय है। प्राचीन काल में तो स्वाभाविक रूप से ही लोग वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय प्रतिदिन करते थे, किंतु वर्षा ऋतु में वेदपाठ, धर्मोपदेश और ज्ञान चर्चाओं का विशेष आयोजन किया जाता था। श्रावणी पर्व पर या नियमित वेद पढ़ने का मतलब है कि आप ईश्वरीय आज्ञाओं को जान रहे हैं और वेदों पर आधारित ऋषि मुनियों के द्वारा निर्मित ग्रंथों के पढ़ने का सीधा अर्थ है कि आप युग युगांतरों के ऋषियों के अनुभूत विचारों को आत्मसात कर रहे हैं। इसलिए आर्य समाजों में यज्ञोपरांत वैदिक प्रार्थना का गान किया जाता है।

वेद सप्ताह का करें आयोजन

श्रावणी पर्व पर आर्यजन अपने-अपने घरों में, आर्य समाजों और शिक्षण संस्थानों में सात दिवसीय विशेष यज्ञ, दैनिक योग, दैनिक स्वाध्याय, साप्ताहिक सत्संग, समय-समय पर मानव सेवा, दैनिक साधना आदि का संकल्प लें।

युवा पीढ़ी को पहनाएं यज्ञोपवीत

अपने बच्चे-बच्चियों का उपनयन-यज्ञोपवीत संस्कार कराएं, अपने यज्ञोपवीत बदलें, नए यज्ञोपवीत धारण करें।

यज्ञोपवीत के तीन धागे-सूत्रों का संदेश-उपदेश आदेश श्रवण करें, सोचें, समझें और अमल करें। देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण से उऋण होने के लिए संकल्प के अनुसार पुरुषार्थ करें।

स्वाध्याय के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन से आनलाइन वेद, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, महर्षि दयानन्द जीवन चरित, आर्य समाज का इतिहास, उपनिषद, दर्शन शास्त्र बच्चों के लिए महापुरुषों के जीवन पर आधारित कॉमिक्स, अनेक अन्य आर्ष साहित्य मंगवाकर उनका स्वाध्याय करें।

महर्षि दयानन्द जयंती-प्रतियोगिता वाली कॉमिक और ग्रंथों को पढ़ें

हम आर्यों के घरों में महर्षि दयानंद का चित्र, नमस्ते का स्टीकर, चारों वेद, 11 उपनिषद, 6 दर्शन शास्त्र, बाल्मीकि रामायण, गीता, समृति ग्रंथ, ब्राह्मण ग्रंथ और आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा रचित प्रेरणाप्रद पुस्तकें होनी ही चाहिए। ऑनलाइन पुस्तकें मंगाने के लिए **www.vedicprakashan.com** पर लॉगइन करें अथवा 9540040339 पर सम्पर्क करें।

बंधुओं, हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमें अपने घर में या आर्य समाज में केवल संग्रहालय नहीं बनाना बल्कि पुस्तकालय बनाना है। संग्रहालय तो वस्तुओं को सजाकर रखने कि प्रक्रिया है लेकिन पुस्तकालय में रखी हुई पुस्तक पढ़ने के लिए प्रयोग की जाने वाली होती हैं। जबकि संग्रहालय में रखी हुई प्रत्येक वस्तु या पुस्तकें केवल आप देख सकते हैं, उन्हें ले नहीं सकते। उपयोगिता तो तभी है जब हम स्वाध्याय का नियम बनाएं।

- धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रथम पृष्ठ का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

और उनके अनुयाइयों, प्रमुख शिष्यों आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, अमर शहीदों एवं महान पुरुषो को जिन्होंने वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया, उनको स्मरण करके प्रेरणा प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर और उददेश्य होता है।

संसार के उपकार करने के इस क्रम में आज जब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200 वां जयंती वर्ष और आर्य समाज का 150वां स्थापना वर्ष दो वर्षीय आयोजनों के रूप में पूरे विश्व में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है, तब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा 18-21 जुलाई 2024 तक न्यूयार्क अमेरिका में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन अपने आप में अद्भुत, अनुपम और अविस्मरणीय सिद्ध होगा, ऐसा हमें पूरा विश्वास है। इस अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को लेकर विश्व व्यापी आर्य समाज के कोने-कोने से सकारात्मक और भावनात्मक संदेश प्राप्त हो रहे हैं और न्यूयार्क अमेरिका में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में संपूर्ण विश्व से आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ पहुँच रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अमेरिका को लेकर संपूर्ण विश्व के आर्यजनों में अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास है और ऐसा क्यों न हो? क्योंकि यह अवसर ही कुछ ऐसा है, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वां जयंती वर्ष और आर्य समाज का 150वां स्थापना वर्ष दोनों अवसर संपूर्ण आर्य समाज के लिए ऐतिहासिक हैं, इसलिए भारत से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान, ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, सार्वदेशिक आर्य वीर दल न्यास के अध्यक्ष आचार्य स्वामी देवव्रत जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, आर्य समाज हनुमान रोड की कोषाध्यक्ष श्रीमती रश्मि वर्मा जी, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी और अन्य अनेक महानुभाव एक जत्थे के रूप में भारत की राजधानी दिल्ली से अमेरिका न्यूयार्क के लिए रवाना हुए। इससे पूर्व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री एवं सदस्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कोर कमेटी, श्री विनय आर्य जी, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के सुपुत्र श्री विवेक आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा के कोषाध्यक्ष श्री मनीष भाटिया जी, श्री अजय कालरा जी इत्यादि महानुभाव अमेरिका पहुंच गए थे।

भारत एवं विश्व के अन्य देशों से अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अमेरिका में सम्मिलित होने के लिए पहुंचने समस्त आर्यजनों, अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों को उनकी सुखद, सफल और मंगलयात्रा के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं तथा आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा आयोजित इस 4 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिए अग्रिम बधाई। *-संपादक*

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, न्यूयार्क के अवसर पर विशेष

भारत-अमेरिकी ऐतिहासिक सम्बन्ध एवं आर्यसमाज का प्रचार

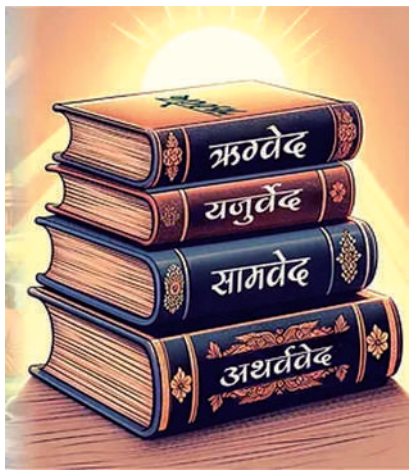

आज से हजारों वर्ष पूर्व **जब पृथ्वी पर केवल एक ही विचारधारा, वेद का साम्राज्य था** और उस साम्राज्य की समाप्ति के दौर के आरंभ में **महाभारत** में एक पात्र हैं **अर्जुन,** जिनका विवाह **अमेरिका** की निवासी **उलोपी** से हुआ था, यह वह पहला सम्बन्ध है जो हम सबको अमेरिका और भारत के संपर्क के नाते ज्ञात है। **आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी** ने स्वयं इसका जिक्र अपने पत्र व्यवहार में किया है, वे लिखते हैं-

"जिस प्रकार भाप के एंजिन आज चलने लगे हैं वैसे धूम्रयानों का प्रयोग पुराकाल में भी इस देश में होता था। आज हम समुद्रपारीय देशों की यात्राओं को धर्म से विरुद्ध कृत्य समझ बैठे हैं, किन्तु हमारे ही एक पूर्वज पाण्डव अर्जुन ने अमेरिका देश (पाताल) जाकर वहां की राजकन्या उलोपी से विवाह किया था। भला उस समय कलिवर्ज्य का पाखण्ड कहां था? यूरोपीय देशों को अमेरिका का पता चाहे सोलहवीं शताब्दी मे ही लगा, परन्तु आर्यावर्त वासियों को तो उस महाद्वीप का ज्ञान बहुत पूर्व ही था।"

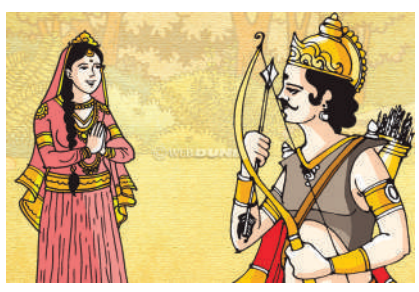

इसके पश्चात महर्षि का कार्य और प्रसिद्धि जब भारत में तेजी से बढ़ रही थी, उस समय अमेरिका के रहने वाले एक विद्वान **कर्नल अल्कॉट** और **मैडम ब्लावस्टकी** का भारत आने का कार्यक्रम बना, उन्होंने **18 फरवरी सन 1878** को अमेरिका के शहर न्यूयॉर्क से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की सेवा में पत्र लिखा, उन्होंने वह पत्र **थियोसोफिकल सोसायटी** के **अध्यक्ष** के नाते से लिखा था, उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से मिलने की इच्छा प्रकट की थी और उनकी विचारधारा को और ज्यादा जानने की इच्छा से वह उनसे मिलना चाहते थे। महर्षि को पत्र प्राप्त हुआ तो उन्होंने इसका उत्तर भी लिखवाया और उन्होंने उत्तर लिखवाते समय प्रसन्नता व्यक्त की थी, विशेषकर इस बात को लेकर कि अमेरिका और भारत का संबंध जो 5000 वर्ष से टूटा हुआ सा था, वह फिर से जुड़ने का आधार बन रहा है। महर्षि ने लिखवाया -

"जगदीश्वर को असंख्य धन्यवाद है कि उसी कृपा से लगभग पांच हजार वर्ष के पश्चात्, महाभाग्य के उदय होने से, हमारे प्रिय पातालदेश निवासी आपका (जिनका आपसी व्यवहार छूटा हुआ था), और हम आर्यावर्त निवासियों के फिर से आपसी प्रीति, उपकार, पत्रव्यवहार और प्रश्नोत्तर करने का समय आ गया है। मैं आपसे बड़े प्रेम से पत्र व्यवहार करना स्वीकार करता हूं।"

इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती और अमेरिका के निवासी कर्नल अल्कॉट का संपर्क आरंभ हुआ और वह लंबे समय तक चला, वे भारत आकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से मिले, परस्पर अनेक वार्तालाप हुए,

विचार विमर्श हुआ, कुछ बातों पर विचार भेद भी हुआ और लगभग 2 वर्षों के पश्चात यह संबंध विच्छेद हो गया और दोनों की राय अलग-अलग हो गई। एक समय यह भी था जब थियोसोफिकल सोसायटी को आर्य समाज की एक शाखा मानने का भी विचार हुआ, महर्षि ने अपनी आत्मकथा इन्ही के कहने पर लिखी थी और वो अमेरिका निवासी कर्नल साहब की पत्रिका **"थियोसोफिस्ट"** में ही क्रमशः प्रकाशित भी हुई, इसके लिए तो अल्कॉट साहब का धन्यवाद करना चाहिए, यह तो दो बातें अमेरिका और भारत के आपसी संबंधों की प्राचीन और कुछ समय पहले की आर्य समाज से जुड़ी हुई घटनाओं को लेकर की थी।

इस लेख में हम आर्य समाज का अमेरिका में प्रचार-प्रसार और संगठन

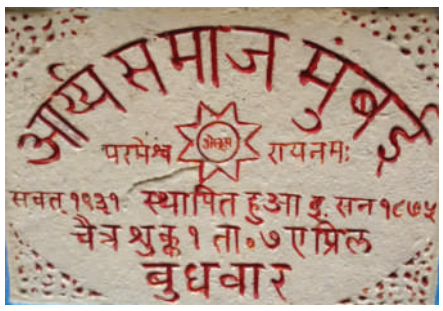

की बात करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने **आर्य समाज की स्थापना 1875 में मुंबई में** की और उसके पश्चात् तुरंत ही उनके शिष्यों में उनकी विचारधारा को पूरी दुनिया में फैलाने का एक अद्भुत संकल्प सामने आया, चाहे वह प्रयत्न संगठित नहीं था किन्तु व्यक्तिगत प्रयासों से महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा पूरे विश्व में फैलाने का प्रयत्न इस दौरान हुआ और इस व्यक्तिगत प्रयासों से भारत के कोने-कोने में तथा विश्व के अन्य अनेक देशों तक पहुंची।

हम इस लेख में चर्चा करेंगे संयुक्त राज्य अमेरिका की, सर्वप्रथम आर्य समाज का साहित्य संभवतः 1893 के विश्व धर्म महासम्मेलन के अवसर पर पहुंचा जो कि शिकागो में संपन्न हुआ था, जिसमें हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व स्वामी विवेकानंद ने किया था और उनका वह संबोधन उनकी पहचान बन गया था, उस समय भारत के **दो आर्य समाजी उत्साही युवक** अपनी निजी यात्रा पर अमेरिका आए और **पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जी** का लिखा हुआ अंग्रेजी साहित्य भी साथ लाए, सर्वप्रथम वैदिक धर्म की बातों को उन्होंने ही अमेरिका की धरती पर प्रस्तुत किया और उनके उनके नाम थे **लाला जिन्दा राम** और **श्री सिद्धराम**। सम्मेलन के दौरान भी कई अमेरिकियों से उनका परिचय हुआ और सम्मेलन के पश्चात कई जगह वैदिक धर्म को लेकर के उन्होंने भाषण भी दिए, सन 1909 तक भारत में आर्य समाज का संगठन भी बहुत मजबूत हो चुका था और 1909 में पुनः अमेरिका में सर्व धर्म महासम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें आर्य समाज की ओर से वैदिक विद्वान डॉ. केशव देव शास्त्री जी भी सम्मिलित हुए। उन्होंने यहां अपना व्याख्यान भी दिया तथा उसके पश्चात

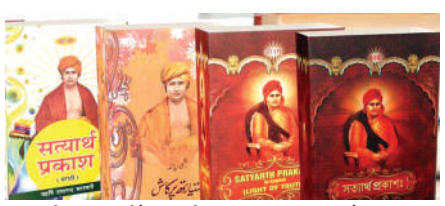

अमेरिका में उनके व्याख्यान आरंभ हुए उन्होंने वेद संबंधी बातों को तर्कपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करना आरंभ किया तो यहां के स्थानीय अंग्रेज भी उनके प्रभाव में आए बिना ना रह सके, हालांकि केशव देव जी यहां पर डॉक्टरी की पढ़ाई करने के लिए आए थे, पर वैदिक धर्म के प्रचार की नींव उन्होंने अपने व्याख्यानों से अमेरिका में रख दी थी। **अमेरिकी भूमि पर अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश लाने का प्रथम श्रेय भी हमें डॉ. केशव शास्त्री जी को देना होगा।** डॉ. केशव देव शास्त्री जी की भांति ही अन्य युवक भी अमेरिका पढ़ने के लिए आए, किन्तु वैदिक धर्म के प्रचार का संकल्प भी उन सभी ने निभाया। उन्हीं में से एक प्रमुख नाम है **श्री सुखदयाल जी** जो बाद में **"स्वामी**

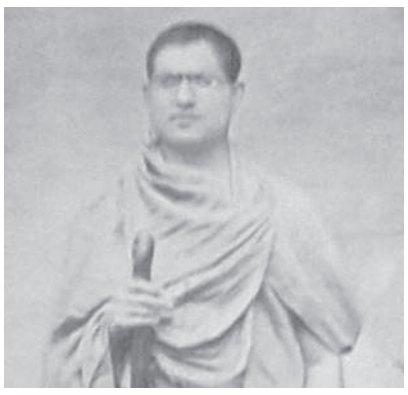

सत्यदेव परिव्राजक" के नाम से बहुत प्रसिद्ध हुए। उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना भी की। **डॉ. दानचंद्र देव जी** भी उन्हीं आरंभिक विद्यार्थियों में से एक थे जो अमेरिका में डाक्टरी की पढ़ाई करने के लिए आए थे और यहां पर धर्म प्रचार भी करते रहे। अगर बात करें व्यवस्थित आर्य समाज के प्रचार की तो उनमें से एक प्रमुख नाम है **मेहता जैमिनी जी** जिन्हें **सूरीनाम, गुयाना और त्रिनिदाद आदि** देश में आर्य समाज की नींव मजबूत करने का श्रेय प्राप्त है। उनका 1929 में अमेरिका की धरती पर आगमन हुआ, न्यूयॉर्क में ही उनके सर्वाधिक व्याख्यान हुए और यहां के निवासियों को आर्य समाज का परिचय और मजबूती से मिल

सका। उसके पश्चात् **1935 में शिकागो** में फिर से **विश्व धर्म महासम्मेलन** में आर्य समाज के प्रतिनिधि के रूप में प्रसिद्ध आर्य प्रचारक **पंडित अयोध्या प्रसाद जी** का आगमन हुआ। इसी दौरान गुयाना में प्रचार कार्य कर रहे **स्वामी भास्करानंद जी** का भी न्यूयॉर्क में आना हुआ, उनका आना यहां के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। हालांकि उस समय भारतीयों की संख्या अमेरिका में बहुत अधिक नहीं थी, प्रचार कार्य से यहां के मूल महानुभावों में भी वैदिक धर्म की ओर से रुचि बढ़ी और ऐतिहासिक घटनाक्रम के तहत **न्यूयॉर्क के मैनहट्टन की ईस्ट 62वीं गली** में एक **स्थानीय**

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य संस्था की स्थापना की गई जिसका नाम रखा गया **"वैदिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका।"**

इस वैदिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका की स्थापना में बड़ी बात यह थी कि वैदिक धर्म के सार्वभौमिक सिद्धांतों से प्रभावित होकर अमेरिका के मूल निवासी **डॉ. मार्क्स** इसके संस्थापक बने और **डॉ. मेसी** इस संस्था के प्रधान। आर्य समाज के प्रति दोनों ही महानुभावों में काफी आस्था हो गई और इसी के चलते उनकी इच्छा भारत की आर्य समाज की संस्थाओं को देखने की हुई, वह भारत गए भी। डॉ. मेसी का पुत्र भी उनके साथ था और वह चाहते थे कि उसको वैदिक धर्म की शिक्षा दिलवाई जाए और इसी कारण से उन्होंने अपने पुत्र को **गुरुकुल कांगड़ी** में भर्ती भी करवा दिया। पर

दोनों जगह की संस्कृति, खान-पान, व्यवहार आदि में काफी अंतर के चलते एक वर्ष के पश्चात डॉक्टर मेसी के सुपुत्र अमेरिका वापस लौट गए और उसके पश्चात् इन दोनों महानुभावों के मन में कुछ विचार ऐसे पैदा हुए कि यह कार्य आगे ना बढ़ सका। इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि ये बना हुआ संबंध अधिक न चल सका, अगर डॉक्टर मेसी के पुत्र का वेद ज्ञान का संकल्प भारत में पूरा हो गया होता तो शायद अमेरिका में आर्य समाज की स्थिति कुछ और ही होती। अमेरिकी महाद्वीप से सटे **गुयाना, सूरीनाम और त्रिनिदाद और टोबैगो** में ज्यादा प्रचार आर्य समाज का रहा, अगर यह कहा जाए कि अमेरिका में आर्य समाज के प्रचार प्रसार में इन तीनों देशों में आर्य समाज की प्रगति का बहुत बड़ा योगदान रहा तो गलत नहीं होगा। जो प्रचारक इन देशों में गए, वे अमेरिका भी आए उपरोक्त प्रचारकों के अतिरिक्त **पंडित ऋषि राम जी, पंडित धर्मशील जी, पंडित धर्मजीत जिज्ञासु जी और आचार्य उषर्बुद्ध जी** के नाम को श्रद्धापूर्वक

उल्लेख किए बिना यह लेख अधूरा-सा रहेगा।

उपरोक्त आर्य प्रचारकों के निरंतर आगमन से अमेरिका में भी आर्य समाज के संगठन को मजबूती मिली। न्यूयॉर्क सिटी में प्रथम आर्य समाज की स्थापना हुई, गुयाना आदि देशों में प्रतिज्ञाबद्ध (इंडेंचर) कुली प्रथा की समाप्ति पर वहां से भी आकर आर्यों का अमेरिका में बसने का क्रम आरंभ हुआ, फलस्वरूप न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी आदि स्थानों पर आर्य समाज का गठन हुआ। आहिस्ता-आहिस्ता यह अमेरिका के अन्य नगरों में भी विस्तारित हुए, शिकागो, ह्यूस्टन, अटलांटा, डेट्रायट आदि बड़े नगरों में आर्य समाज के भवन बन चुके हैं, साथ ही सेवा की गतिविधियां भी निरंतर इन आर्य समाजों के माध्यम से चलाई जा रही हैं। न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी में सबसे अधिक आर्य समाज का प्रचार प्रसार हुआ। सबसे अधिक संख्या में आर्य समाज की इकाइयां भी और भवन भी इसी क्षेत्र में खुले।

महर्षि दयानन्द जी ने जब आर्य समाज के नियम बनाए थे तब यह भी एक नियम था कि एक **"प्रधान समाज"** होगा, **इसी नियम के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभाओं का निर्माण हुआ** था। वर्ष 1991 में यह कार्य अमेरिका में हुआ जब यहां पर आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका की स्थापना की गई, संयुक्त राज्य अमेरिका का यह पहला आर्य समाज का राष्ट्रव्यापी संगठन बना **"आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका"**। इसके गठन के पश्चात् आर्य समाज के विस्तार की गति और बढ़ी तथा आहिस्ता-आहिस्ता कार्यक्रम भी आरंभ हुए, पत्रिका भी निकाली जाने लगी, कुछ प्रकाशन कार्य भी हुआ, भारत से प्रचारकों को बुलाने का क्रम भी बना और वार्षिक महासम्मेलन की परंपरा आरंभ हुई, जो लगातार आज भी जारी है। हालांकि **"अमेरिकन आर्यन लीग"** के नाम से एक संगठन की स्थापना गुयाना में की गई थी, किन्तु उसकी आयु बहुत अधिक न रह सकी। डॉक्टर मेसी वाली वैदिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका के संबंध में भी अब कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। यहां हम ये जरूर कहना चाहेंगे कि मजबूत केंद्रीय संगठन अगर आरंभिक समय में बन जाता तो शायद अमेरिका में भी और ज्यादा इकाइयां आरंभ में ही खुल जातीं, हमें संगठन के महत्व को समझना होगा। गुयाना, सूरीनाम, मॉरीशस आदि में आर्य समाज की मजबूती, वहां बने केंद्रीय संगठन के कारण ही आ सकी थी।

खैर, हम भारत और अमेरिका के आर्य समाज के संदर्भ में चर्चा करें तो एक नाम की चर्चा करना बहुत आवश्यक और दिलचस्प लगता है और वह नाम है **इवान सैमुअल स्टोक्स**। अमेरिका के फिलाडेल्फिया की प्रसिद्ध कंपनी जो एलीवेटर बनाने का व्यवसाय करती थी **"स्टॉक और पैरिश मशीन कंपनी"** जो

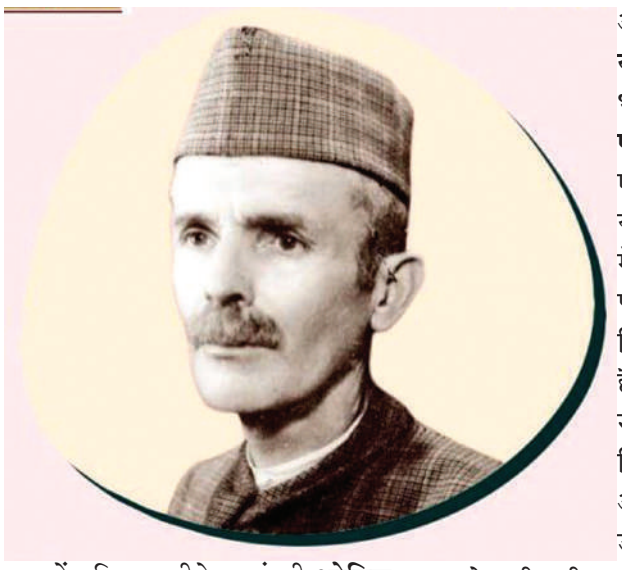

बाद में प्रसिद्ध एलीवेटर कंपनी **ओटिस** में मर्ज हो गई थी, इसकी स्थापना करने वाले संपन्न **क्वेकर परिवार** का एक सदस्य था युवा **इवान सैमुअल स्टोक्स**। एक बार एक डॉक्टर के द्वारा भारत में चलाए जा रहे **लेप्रसी मिशन** की चर्चा उन्होंने अमेरिका में सुनी और उसके मन में **क्रिश्चियन मिशनरी** के माध्यम से भारत में लेप्रसी मिशन के साथ काम करने की इच्छा जाग गई और वह अपनी इच्छा को लेकर के सन 1904 में मुंबई भारत आ गए और वहां वे हिमाचल में लेप्रसी मिशन जोकि क्रिश्चियन मिशनरीज का एक प्रोजेक्ट था को शिमला में संभालने लगे। पर वह जो सोचकर आए थे कि मैं हिमाचल को इसाई बना दूंगा, पर वह नहीं कर पाए। क्योंकि होनी में तो कुछ और लिखा था। एक बार सेवा के कार्यों के दौरान जब प्लेग फैला हुआ था तब आर्य समाज के कार्यकर्ता **पंडित रुलिया राम जी** से उनकी भेंट हुई, उन्होंने पंडित रुलिया राम के अद्भुत सेवा कार्य को देखा और हैरान हो गए। उन्होंने पंडित रुलिया राम से मिलने की इच्छा प्रकट की और मिलने पर उनसे पूछा कि आपके अंदर यह सेवा की भावना किसने जगाई? पंडित रुलिया राम बोले कि **मेरे गुरु दयानन्द** ने और उनके लिखित ग्रंथ **सत्यार्थ प्रकाश** ने। इवान जो पूरे हिमाचल को इसाई बनाने के स्वपन देखते थे, उनका जीवन **महर्षि दयानन्द के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश** को पढ़कर बदल चुका था। उन्होंने इच्छा रखी कि वे अपना शेष जीवन वैदिक धर्म के अनुसार ही जीएंगे, क्योंकि वैदिक धर्म का अनुयायी बनने की सोच और सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर उनका जीवन बदल गया। उन्होंनें अपने बदले हुए जीवन के आधार पर ही अपना **नाम बदलकर सत्यानन्द स्टोक्स** रखना उचित समझा और वे **इवान सैमुअल स्टोक्स से सत्यानंद स्टोक्स के नाम से प्रसिद्ध हुए।** यह था उनके जीवन पर आर्य समाज और ऋषि दयानन्द का अद्भुत प्रभाव। एक पक्के आर्य समाजी, एक पक्के वेद भक्त, देशभक्त शायद यह पहले अमेरिकी होंगे, जो भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में 6 महीने लाहौर की जेल में भी रहे। शायद ये पहले अमेरिका के निवासी होंगे जिन्होंने अपने **घर में शानदार यज्ञशाला** बनाई और अपने घर में **यज्ञ करें बिना भोजन बनाने तक पर पाबंदी** लगा दी। एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि भारत में आज जो सेब का फल खाया जाता है, जिसे "एप्पल" कहते हैं, जिसकी अरबों रुपए की खेती उसी हिमाचल में तथा आसपास हो रही है उसको भारत में लाने का श्रेय भी इसी आर्य सामाज के विद्वान सत्यानंद स्टोक्स को ही जाता है। वो ही अमेरिका से इस सेब का बीज लेकर आए थे और हिमाचल के पूरे क्षेत्र के किसानों को दिया और वहां पर खेती शुरू कराई और आज उसका परिणाम है कि हिमाचल का सेब आज दुनिया भर में अपनी एक अलग पहचान रखता है। आर्यसमाजी बनने के बाद उन्होंने अपने सभी बच्चों के नाम बदलकर के हिन्दू नाम रख दिए, धर्मपत्नी का नाम भी बदला और जीवन पर्यंत 1946 में निधन तक वे आर्यसमाज, वैदिक धर्म और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रियता से भाग लेते रहे। इस तरह से अमेरिका के ही एक मूल निवासी इवान सैमुअल स्टोक्स का आर्य समाज के साथ अभिन्न संबंध

हुआ। वर्तमान में उनका परिवार शिमला में उनकी संपत्ति की देखरेख करता है, यज्ञशाला आज भी वैसे की वैसी बनी हुई है और उनके परिवार के अनेक सदस्य आज भी अमेरिका में निवास करते हैं। आशा है कि हम इन सबके पारिवारिक सदस्यों को पुनः संगठन से जोड़ सकें और साथ ही आज आर्य समाज के 150वें वर्ष के न्यूयॉर्क में हो रहे समारोह में हम अमेरिका में आर्य समाज के प्रचार कार्य में जिन महानुभावों ने अपना योगदान दिया है, उनको शत-शत नमन करते हैं, और आशा करते हैं कि हम उनके कार्यों को और अधिक आगे बढ़ाने में सफल हो सकेंगे।

- विनय आर्य, महामन्त्री,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

साप्ताहिक स्वाध्याय

बम्बई में आर्य समाज की स्थापना

गतांक से आगे-

भारवि कवि ने कहा है-

वीतस्पृहाणामपि मुक्तिभाजां-
भवन्ति भव्येषु हि पक्षपाताः ।

महर्षि दयानन्द आर्यजाति को अपना बिगड़ा हुआ किला समझते थे और अन्याधर्मावलम्बिनी जातियों को उस किले पर आक्रमण करनेवाले प्रतिपक्षी। यह विचार समय के साथ धीरे-धीरे परिपक्वता को प्राप्त हुआ। जिस समय का हम वर्णन कर रहे हैं उस समय महर्षि जी रक्षा, सुधर और प्रत्याक्रमण के पूरे कार्यक्रम को तैयार कर चुके थे। वह उस समय युद्ध की गहराई में थे। सब प्रतिपक्षी चौकन्ने हो चुके थे और महर्षि जी से सीखे हुए अस्त्रों की सहायता से उनके प्रत्याक्रमणों को रोकने का उद्योग कर रहे थे।इस प्रकार प्रत्याक्रमण द्वारा आक्रमणों को रोकते हुए धर्म-महारथी 22 अक्टूबर 1874 को प्रयाग से बम्बई पहुंचे। देर से महर्षि जी के पास बम्बई निवासियों के निमन्त्रण आ रहे थे। बम्बई के समाज सुधारक सुधार सम्बन्धी कार्य को उन्नति देने के लिए व्यग्र थे। इस कारण उनका आग्रह था कि महर्षि जी शीघ्र ही बम्बई पधारें। महर्षि जी के भक्त पं. सेवकलाल जी आदि ने पहले ही से काशी-शास्त्रार्थ की प्रतियां शहर में बंटवाकर प्रसिद्ध कर दी थीं। स्टेशन पर महर्षि जी का अच्छा स्वागत हुआ। बालुकेश्वर पर एक उत्तम आश्रम में महर्षि जी के निवास का प्रबन्ध किया गया था। वहीं पर प्रतिदिन धर्म-चर्चा होने लगी। बम्बई में वल्लभ सम्प्रदाय का विशेष जोर है। महर्षि जी ने उसी का खण्डन आरम्भ किया। वल्लभ सम्प्रदाय की लीला का उल्लेख अब आवश्यक नहीं रहा। सम्प्रदाय के गुरुओं की घृणास्पद लीलाओं से अब देश काफी परिचित हो चुका था। महर्षि जी ने जब बम्बई में उनके आचरण दें। और सुने, तो उनके हृदय में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ। उन्होंने बलपूर्वक खण्डन प्रारम्भ किया। वल्लभ-सम्प्रदाय के अनुयायियों में हलचल पैदा हो गई। गोकुलिये गोसाइयों में जीवन जी गोसाईं बहुत चलता-पूजा था। उसने महर्षि जी के सेवकों तक को बहकाकर विष द्वारा धर्म की आवाज को शान्त करने का यत्न किया, परन्तु महर्षि जी को रहस्य का पता लग गया और जीवन जी का कंटक दूर न हुआ। कुछ लोग महर्षि जी का पीछा करने लगे। वे छाया के समान पीछे रहने लगे ताकि अवसर पाकर कांटे को उाड़ दें; परन्तु सफलता प्राप्त न हुई। महर्षि जी निर्भय तो थे, परन्तु असावधान नहीं थे। बहुत-सी आपत्तियां तो उनकी सावधानता से ही दूर हो जाती थीं। कई लोग समझते हैं कि आंखें बन्द करके चलने का नाम निर्भयता है, किन्तु महर्षि जी उनमें से नहीं थे। भय को न दे ना निर्भयता नहीं, भय को दे ना और दे कर भी कर्तव्य के मार्ग से न विचलना ही निर्भयता के नाम से पुकारा जा सकता है। सावधानता महर्षि जी का विशेष गुण था। अपने डेरे की छोटी-से-छोटी बात पर महर्षि जी की दृष्टि रहती थी। बम्बई के एक सेठ ने दुकान पर कह छोड़ा था कि महर्षि जी का नौकर खाने-पीने को जो सामान लेने आए वह दे दिया जाय और बिल मेरे पास भेज दिया जाय। एक बार जांच करने पर महर्षि जी को पता चला कि आवश्यकता से सात गुणा अधिक सामान डेरे पर आया है; नौकर लोग अधिक सामान को बेचकर अपनी मुट्टी गर्म कर रहे हैं। महर्षि जी ने दो अपराधी नौकरों को सेवा से पृथक् कर दिया।

इस समय महर्षि जी के अनुयायियों की संख्या हजारों से अधिक हो चुकी थी। सुधरे हुए विचारों के लोग देश-भर में फैले हुए थे। वे लोग बिखरे हुए फूलों की भांति इधर-उधर पड़े थे, उनकी माला तैयार नहीं हुई थी। सबके एकत्र न होने से शक्तियां बहुत बिखरी हुई थीं उनका कोई केन्द्र नहीं था। इस अभाव को महर्षि जी के शिष्य

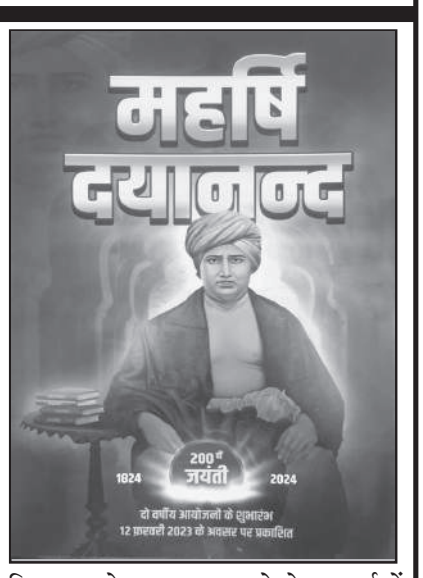

चिरकाल से अनुभव कर रहे थे। बम्बई में बहुत से आर्य- पुरुष महर्षि जी के पास आए और आर्यों का एक संगठन बनाने के विषय में प्रार्थना की। देर तक विचार होता रहा। विशेष चिन्ता नाम के विषय में थी। महर्षि जी ने आर्यसमाज नाम उपस्थित किया, जो आर्य पुरुषों के हृदयों के ऐन अनुकूल था। महर्षि दयानन्द आर्यजाति के सुधारक और रक्षक थे।

-क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
WWW.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Establishing Arya Samaj in Mumbai

Poet has said in a shlok-

Vitasprhanampi
Muktibhajam
Bhavanti bhavyeshu hi
pakshapata

Swami Dayanand considered Arya community as defected fort and believes of other religions as opponents attacking that fort. He found that his observation was proving to be true with passage of time. Swamiji had planned complete program of safety, reform and counter attack. All the opponents had become alert and were trying to safe guard them with the help of methods learnt from Swami Ji.

Thus working for saving the society from foreign attack Swamiji reached Mumbai on 22 October, 1874 from Prayag. Devotees from Mumbai had sent letters for request to visit Mumbai many times. Reformers were very much interested for progressing work of reform. So they requested him to reach Mumbai as early as possible. Devotees of Swami Ji, Pandit Sewak Lal and other had already distributed papers giving details of debate of Kashi and spread Swamiji name and fame all over. Swami Ji was given a great welcome. A nice place selected for him to stay in Balukeshwar. Swami Ji started delivering him speech and having discussed from that place. Vallabh religion is very popular in Mumbai. Swami Ji started condemning that very religion. Giving description of misdeeds of Vallabh religion is not needed here people had already been aware of that all that. Swami Ji observed and listened about all that, his heart was broken, so he started condemning with full force. The disciples of that religion were disturbed a lot. They become active Jiwan Ji Gosain was a very clever and well known person among Gosain sect. He misled even the devotees of Swami Ji and planned to kill Swami Ji with poison. But Swamiji came to know of him planned Jiwan Ji failed in his wicked plan. Some persons starting following him from behind Swami Ji. So as to kill him when they got chance. Swami Ji was fearless but not unaware so he escaped successfully so many dangers, even danger of death due to remain careful. Not to see danger is not fearlessness. But even after knowing about the danger but not getting away from doing one's duty is called fearlessness. Carefulness was his special quality. A Seth of Mumbai had ordered his servant to give whatever some one sent by Swami Ji demanded for Swami Ji and send the bill to him.

Swami Ji came known that quantity of material brought from the shop was seven times he needed. The servant sold the extra material and earned money. So, he dismissed two culprits.

By this time there were thousands of his followers. People with reformed habits and views were there all over the country. They were like scattered flowers, but they could not be brought together, so strengh was in a scaltered position and there was no central place for them.

Devotee of Swamiji had been feeling lack of it for a long time. So many devotees came to Swamiji and requested to prepare some Organisation of such devotees. There was long process of discussion, The main point of discussion was about the Name of the Organisation, Swamiji suggested 'ARYA SAMAJ', That was considered quite suitable by all, Swamiji was reformer and also the guard of the Arya society. 'Arya Samaj' was decided by all and preparations were started to start the organisation 'Arya Samaj'.

Base is needed for every society. The Base of Arya Samaj is 'Ved'. The base needed such a Granth (book) that should be easily understood by people. Due to that book every one would be able to know what are the rules to be obeyed by the members before entering Arya Samaj. Luckily such granth was ready, When Swamiji was in Aligarh, for Prachar work, Raja Jai Krishna Das requested Swamiji to publish such a book which should all rules of the society. Swamiji collected all his speeches and published the Granth 'SATYARTH PRAKASH'.

Time was suitable but Swamiji had to move to Surat. So establishment of Arya Samaj was delayed for some time. Discussion was started on 24 November, 1874. About 60 devotees promised to become members, (sabhasad). Swamiji had to leave membai in December. After 3 months of Prachar Karya in Gujrat Swamiji returned to Mumbai. Then the topic of Arya Samaj was discussed again with full of rapture.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW. vedicprakshan.com ir contact - 9540040339

स्वास्थ्य रक्षा

दमा की आहार चिकित्सा

भोजन का समुचित रूप से पाचन न होने पर वह पक्वाशय में दूषित रस उत्पन्न कर श्वसन प्रणाली में बाधा उत्पन्न करता है, जिससे श्वांस उखड़ने की स्थिति उत्पन्न होने लगती है। इसी को दमा कहा जाता है। लगातार बने रहने वाला जुकाम भी कई बार दमा का कारण बन जाता है। माता-पिता को दमा होने पर संतान को भी यह रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। कई बार वातावरण का प्रभाव, प्रदूषण, किन्हीं चीजों से एलर्जी एवं अन्य कई रोग भी दमा का कारण बन जाते हैं। चिन्ता, दुःख, मानसिक तनाव तथा कई औषधियों के दुष्प्रभाव से भी दमा के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

आज दमा के रोगियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। पहले सिर्फ प्रौढ़ आयु के लोग ही इससे प्रभावित होते थे पर अब हर आयु वर्ग के लोग दमा से पीड़ित होते दिखाई दे रहे हैं।

दमा की पहचान

दौरे के समय सांस लेने में कष्ट होता है। छाती में भारीपन महसूस होता है। पेट फूल जाता है और सारे शरीर में बेचैनी एवं घबराहट के लक्षण पैदा हो जाते हैं। जुकाम हो जाता है। कफ बढ़ जाता है।

दुर्बलता आ जाती है। सोते समय सांस लेने में कष्ट तथा बैठने पर सांस लेने में आराम-महसूस होता है। पेट की खराबी ही दमा का कारण है।

भोजन की चिकित्सा

दमा के रोगी को सबसे पहले अपने पेट और श्वास प्रणाली को साफ करने का उपाय करना चाहिए। इसके लिए उपवास सर्वोत्तम उपाय है एक दो दिन उपवास पर रहकर फिर क्रमशः रसाहार एवं फलाहार पर आ जाएं। इसके बाद सामान्य भोजन जिसमें चोकर सहित मोटे आटे की रोटी एवं लौकी की सब्जी लें। उपवास के दिनों में रोजाना गुनगुने पानी का एनिमा लें।

दमा के रोगी को ठंडे एवं गरिष्ठ भोजन से परहेज करते हुए रात का भोजन बहुत हल्का लेना चाहिए। प्रयास यह रहे कि रात्रि का भोजन सूर्यास्त से पहले ही ले लिया जाए। पीने के लिए गुनगुना पानी ठीक रहता है।

तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, पान मसाला जैसे नशीले पदार्थ एवं शर्करा, मैदा से बनी व तली-भुनी चीजें तथा चाय, काफी आदि दमा के रोगी को छोड़ देना चाहिए।

छाती, गला तथा पसलियों को हवा लगने से बचायें। चिकने पदार्थ, चने की दाल से बनी चीजें और मिर्च मशाले के पदार्थ न खाएं। पेट में कब्ज न होने दें। कब्ज होते ही उसे तोड़ने की कोशिश करें।

भोजन व्यवस्था

सुबह पेट साफ होने के बाद नीबू+ शहद+गर्म पानी का सेवन करें।

नौ बजे किशमिश, मुनक्का तथा अंजीर को रात में धेकर थोड़े पानी में भिगो लें। नाश्ते में अदरक, काली मिर्च तथा इलाइची की चाय के साथ इन्हें लें।

साढ़े ग्यारह बजे किसी सब्जी या फल का रस लें।

डेढ़ बजे फल, उसके साथ सब्जी का सूप या सलाद और उबली सब्जी का सेवन करें।

शाम के चार बजे फल का रस (संतरा, मौसमी, गाजर, सेब, अनार आदि) का सेवन करें।

छः बजे नीबू शहद गर्म पानी लें यदि उसके साथ जरूरी समझे तो भीगी हुई किशमिश, मुनक्का, अंजीर या दस खजूर लें। साढ़े सात बजे सब्जी का सूप तथा कोई भी फल लें।

रात में साढ़े नौ बजे अदरक इलाइची वाली चाय लें तथा उपरोक्त आहार व्यवस्था पर रोगी एक दो माह तक रहने दें तो बहुत लाभ होगा।

दही का सेवन न करें आलू केवल सूप में सब्जियों के साथ डाल सकते हैं। अरबी, आलू, भिन्डी, गोभी, मैदे की चीजें न लें। सूप में कभी सब्जियों का सूप, जिसमें टमाटर भी डालें और कभी काले चने का सूप लें।

रात में सोते समय विशेष ध्यान रखें बन्द कमरे में न सोयें, मुंह और सिर ढककर न सोएं। शरीर पर कपड़ा रखें। पांव को गर्म रखें। दायीं या बायीं करवट अपनी सुविधा अनुसान सोयें। बायीं करवट सोना अधिक अच्छा रहता है।

हल्दी को रेत में भुन-पीस कर चूर्ण बना लें प्रति दिन एक चम्मच चूर्ण गर्म पानी से खाएं। गेहूं के हरे पौधे का रस दो चम्मच की मात्रा में नित्य पिएं। चार चम्मच मेथी (दाना) एक गिलास पानी में उबालें फिर उसे छान कर पी जाएं।

हर सिंगार की छाल का चूर्ण पानी में डाल कर पीने से दमा शीघ्र नष्ट हो जाता है। तुलसी और अदरक का रस दोनों तीन-तीन ग्राम की मात्रा शहद के साथ सेवन करें। चार लौंग, चार कालीमिर्च तथा चार पत्ते तुलसी के सबको चटनी बनाकर प्रति दिन खाएं।

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में
सदस्यगण अपना शुल्क भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अतः ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2014 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1500/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। आप अपना शुल्क सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं- " Arya Sandesh Saptahik "

A/c No. 1098101002787 IFSC Code: CNRB0001098

Canara Bank, Parliament Street, New Delhi

कृपया शुल्क जमा कराने के उपरान्त डिपोजिट स्लिप/मैसेज का फोटो 9540040322 पर अवश्य भेजें- ***सम्पादक***

खेद व्यक्त

खेद है कि किन्हीं अपरिहार्य कारणों के चलते आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक 34 वर्ष 47 दिनांक 08 से 14 जुलाई, 2024 प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - *सम्पादक*

शोक समाचार

श्री बिपिन भल्ला जी को पितृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ता श्री बिपिन भल्ला जी के पूज्य पिता श्री आर. सी. भल्ला जी का 5 जुलाई, 2024 को 87 वर्ष आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सुभाष नगर शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 8 जुलाई, 2024 को आर्यसमाज बी-2 जनकपुरी नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी सहित उनके निजी परिवार सं निकटवर्ती आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री आशीष आर्य जी को पितृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ता, सम्वर्धक एवं आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के उपमन्त्री श्री आशीष आर्य जी के पूज्य पिता श्री रमेश जी का 13 जुलाई, 2024 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 जुलाई, 2024 को उनके आवास पर सम्पन्न हुई।

श्री पूरन चन्द गुप्ता जी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन कार्यों सहयोगी एवं विद्या दर्शन आफसैट प्रैस के स्वामी श्री पूरनचन्द गुप्ता जी का 13 जुलाई, 2024 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ गाजीपुर शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 24 जुलाई, 2024 को दोपहर 2 बजे उनके निवास डी-36, चन्द्र विहार, मंडावली, दिल्ली में सम्पन्न होगी।

श्री अश्विनी कुमार शर्मा जी का निधन

आर्यसमाज राधापुरी, दिल्ली के कोषाध्यक्ष श्री अश्विनी कुमार शर्मा जी का दिनांक 13 जुलाई, 2024 को लम्बी बीमारी के उपरान्त निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार अगले दिन गीता कालोनी शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 26 जुलाई, 2024 को सायं 3 बजे आर्यसमाज सूरजमल विहार, दिल्ली में सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 जुलाई, 2024 से रविवार 21 जुलाई, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 18-19-20/07/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 17, जुलाई, 2024

प्रतिष्ठा में,

OM

INTERNATIONAL
ARYA MAHASAMMELAN 2024

Long Island, New York, USA

LIVE Telecast Schedule

Friday 19 July 2024

5am - 7am IST	6pm - 9:30pm IST
Ek Shaam Rishi Ke Naam	Inauguration Ceremony

Saturday 20 July 2024

5am - 7am IST	7pm - 9:30pm IST
Cultural Program	Vedic Conference

Sunday 21 July 2024

5am - 7am IST	6pm - 9:30pm IST
Cultural Program	Closing Ceremony

Only on Arya Sandesh TV

Scan to Watch

Available on

JioTV | Jio tv+ | PLAYBOXTV | dailyhunt | Google Play | YouTube | CruzeTV | DNS | Shava | REAL TV | Jadoo | OnlineChannels LIVE | LimeX | TVZON | tvhub.in | KaryTV | VooDoo | GEM TV

www.aryasandeshtv.com

आर्य परिवारों के विवाह योग्य सदस्यों के लिए
मनपसन्द जीवनसाथी खोजने की ऑनलाइन सुविधा

Arya Samaj Matrimony

matrimony.thearyasamaj.org 7428894012

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹60, प्रचारार्थ मूल्य ₹40

विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹120, प्रचारार्थ मूल्य ₹80

पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80, प्रचारार्थ मूल्य ₹50

विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150, प्रचारार्थ मूल्य ₹ 100

स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200, प्रचारार्थ मूल्य ₹120

उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100, प्रचारार्थ मूल्य ₹750

सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹200, प्रचारार्थ मूल्य ₹ 130

सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹250, प्रचारार्थ मूल्य ₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह